मासिक शिवरात्रि की व्रत कथा (Masik Shivratri Vrat Katha)

एक समय चित्रभानु नामक एक गरीब शिकारी था। वह शिकार करके अपने परिवार का पालन-पोषण करता था। एक बार वह एक साहूकार का कर्जदार हो गया और कर्ज न चुका पाने पर साहूकार ने उसे शिवमठ में बंदी बना लिया।

संयोगवश वह दिन शिवरात्रि का था। बंदी रहते हुए शिकारी ने शिव-कथा और शिवरात्रि व्रत की कथा सुनी। शाम को साहूकार ने उसे अगले दिन कर्ज चुकाने का वचन लेकर छोड़ दिया। अगले दिन शिकार करने जंगल गया शिकारी भूख-प्यास से व्याकुल हो गया। रात होने पर वह एक बेल के पेड़ पर चढ़कर सो गया जिसके नीचे शिवलिंग था। रात भर वह अनजाने में ही बेलपत्र तोड़-तोड़कर शिवलिंग पर चढ़ाता रहा। इस बीच तीन हिरणियां और एक मृग क्रमशः आए और शिकारी से अपनी जान बख्शने की भीख मांगी। शिकारी ने उन्हें जाने दिया। सुबह होने पर शिकारी को एहसास हुआ कि अनजाने में ही सही उसने शिवरात्रि व्रत किया और शिवलिंग की पूजा की। उसका हृदय परिवर्तित हो गया। थोड़ी देर बाद वह मृग अपने परिवार सहित शिकारी के पास आया ताकि वह उन्हें मार सके। किंतु शिकारी ने उन्हें जीवनदान दे दिया। इस प्रकार अनजाने में शिवरात्रि व्रत करने से शिकारी को मोक्ष और शिवलोक की प्राप्ति हुई।

www.janbhakti.in